Pro

Chapter 15

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

מַעֲנֶה־	רַךְ	יָשִׁיב	חֵמָה	וּדְבַר־	יַעֲלֶה־	עֶצֶב	אָף׃	1
उत्तर	कोमल	लौटाता-है	क्रोध-को	और-शब्द	जगाता-है	दुःख-का	क्रोध	
H4617	H7390	H7725	H2534	H1697	H5927		H0639	

कोमल उत्तर से क्रोध शांत होता है किन्तु कठोर वचन क्रोध को भड़काता है।

לְשׁוֹן	חֲכָמִים	תֵּיטִיב	דָּעַת	וּפִי	כְּסִילִים	יַבִּיעַ	אִוֶּלֶת׃	2
जीभ	बुद्धिमानों-की	अच्छी-करती-है	ज्ञान-को	और-मुँह	मूर्खों-का	उगलता-है	मूर्खता-को	
H3956	H2450	H3190	H1847	H6310	H3684	H5042	H0200	

बुद्धिमान की वाणी ज्ञान की प्रशंसा करती है, किन्तु मूर्ख का मुख मूर्खता उगलता है।

בְּכֹל־	מָקוֹם	עֵינֵי	יְהוָה	צֹפּוֹת	רָעִים	וטוֹבִים׃	3
सब	स्थान-में	आँखें	यहोवा-की	देखती-हैं	बुरों-को	और-भलों-को	
H3605	H4725		H3068	H6822			

यहोवा की आँख हर कहीं लगी हुयी है। वह भले और बुरे को देखती रहती है।

מַרְפֵּא	לָשׁוֹן	עֵץ	חַיִּים	וְסֶלֶף	בָּהּ	שֶׁבֶר	בְּרוּחַ׃	4
चंगाई	जीभ-की	वृक्ष	जीवन-का	और-टेढ़ापन	उसमें	टूटना	आत्मा-में	
H4832	H3956	H6086		H5558		H7667	H7307	

जो वाणी मन के घाव भर देती है, जीवन—वृक्ष होती है; किन्तु कपटपूर्ण वाणी मन को कुचल देती है।

אֱוִיל	יְנַאֵץ	מוּסַר	אָבִיו	וְשֹׁמֵר	תּוֹכַחַת	יַעְרִם׃	5
मूर्ख	तुच्छ-करता-है	शिक्षा-को	पिता-की	और-रखनेवाला	डाँट-को	चतुर-बनेगा	
H0191	H5006	H4148	H0001	H8104		H6191	

मूर्ख अपने पिता की प्रताड़ना का तिरस्कार करता है किन्तु जो कान सुधार पर देता है बुद्धिमानी दिखाता है।

בַּיִת	צַדִּיק	חֹסֶן	רָב	וּבִתְבוּאַת	רָשָׁע	נֶעְכָּרֶת׃	6
घर	धर्मी-का	खजाना	बहुत	और-आमदनी-में	दुष्ट-की	व्याकुलता	
	H6662	H2633		H8393	H7563	H5916	

धर्मी के घर का कोना भरा पूरा रहता है दुष्ट की कमाई उस पर कलेश लाती है।

שִׂפְתֵי	חֲכָמִים	יְזָרוּ	דָּעַת	וְלֵב	כְּסִילִים	לֹא־	כֵן׃	7
होंठ	बुद्धिमानों-के	बिखेरते-हैं	ज्ञान-को	और-हृदय	मूर्खों-का	नहीं	ऐसा	
H8193	H2450	H2219	H1847		H3684	H3808		

बुद्धिमान की वाणी ज्ञान फैलाती है, किन्तु मूर्खों का मन ऐसा नहीं करता है।

זֶבַח	רְשָׁעִים	תּוֹעֲבַת	יְהוָה	וּתְפִלַּת	יְשָׁרִים	רְצוֹנוֹ׃	8
बलि	दुष्टों-की	घृणा	यहोवा-के-लिए	और-प्रार्थना	सीधों-की	उसकी-प्रसन्नता	
H2077	H7563	H8441	H3068	H8605	H3477	H7522	

यहोवा दुष्ट के चढ़ावे से घृणा करता है किन्तु उसको सज्जन की प्रार्थना ही प्रसन्न कर देती है।

תּוֹעֲבַת	יְהוָה	דֶּרֶךְ	רָשָׁע	וּמְרַדֵּף	צְדָקָה	יְאֵהָב׃	9
घृणा	यहोवा-के-लिए	मार्ग	दुष्ट-का	और-पीछा-करनेवाला	धार्मिकता-को	प्रेम-करता-है	
H8441	H3068	H1870	H7563	H7291	H6666	H0157	

दुष्टों की राहों से यहोवा घृणा करता है। किन्तु जो नेकी की राह पर चलते हैं, उनसेवह प्रेम करता है।

10

מוּסָר	רָע	לְעֹזֵב	אֹרַח	שׂוֹנֵא	תוֹכַחַת	יָמוּת׃
शिक्षा	बुरी	त्यागनेवाले-के-लिए	मार्ग-को	घृणा-करनेवाला	डाँट-को	मरेगा
H4148			H0734	H8130		H4191

उसकी प्रतीक्षा में कठोर दण्ड रहता है जो पथ—भ्रष्ट हो जाता, और जो सुधार से घृणा करता है, वह निश्चय मर जाता है।

11

שְׁאוֹל	וַאֲבַדּוֹן	נֶגֶד	יְהוָה	אַף	כִּי־	לִבּוֹת	בְּנֵי־	אָדָם׃
शेओल	और-विनाश	सामने	यहोवा-के	कितना-अधिक	कि	हृदय	पुत्रों-के	आदमी-के
H7585	H0011	H5048	H3068	H0637		H3826		H0120

जबकि यहोवा के समझ मृत्यु और विनाश के रहस्य खुले पड़े हैं। सो निश्चित रूप से वह जानता है कि लोगों के दिल में क्या हो रहा है।

12

לֹא	יֶאֱהַב־	לֵץ	הוֹכֵחַ	לוֹ	אֶל־	חֲכָמִים	לֹא	יֵלֵךְ׃
नहीं	प्रेम-करता	ठट्ठा	डाँटे-जाना-को	उसे	पास	बुद्धिमानों-के	नहीं	जाएगा
H3808	H0157	H3887	H3198		H0413	H2450	H3808	H3212

उपहास करने वाला सुधार नहीं अपनाता है। वह विवेकी से परामर्श नहीं लेता।

13

לֵב	שָׂמֵחַ	יֵיטִב	פָּנִים	וּבְעַצְּבַת־	לֵב	רוּחַ	נְכֵאָה׃
हृदय	आनन्दित	अच्छा-करता-है	चेहरे-को	और-दुःख-में	हृदय-के	आत्मा	टूटी-हुई
	H8056	H3190	H6440	H6094		H7307	

मन की प्रसन्नता मुख को चमकाती, किन्तु मन का दर्द आत्मा को कुचल देता है।

14

לֵב	נָבוֹן	יְבַקֶּשׁ־	דָּעַת	[ופני]	(וּפִי)	כְסִילִים	יִרְעֶה	אִוֶּלֶת׃
हृदय	समझदार-का	खोजता-है	ज्ञान-को	और-मुँह	और-मुँह	मूर्खों-का	चरता-है	मूर्खता-पर
	H0995	H1245	H1847	H6440	H6310	H3684		H0200

जिस मन को भले बुरे का बोध होता है वह तो ज्ञान की खोज में रहता है किन्तु मूर्ख का मन, मूढ़ता पर लगता है।

15

כָּל־	יְמֵי	עָנִי	רָעִים	וְטוֹב־	לֵב	מִשְׁתֶּה	תָמִיד׃
सब	दिन	दुखी-के	बुरे	और-अच्छा	हृदय-का	भोज	सदा
H3605	H3117	H6041				H4960	H8548

कुछ गरीब सदा के लिये दुःखी रहते हैं, किन्तु प्रफुल्लित चित उत्सव मनाता रहता है।

16

טוֹב־	מְעַט	בְּיִרְאַת	יְהוָה	מֵאוֹצָר	רָב	וּמְהוּמָה	בוֹ׃
अच्छा	थोड़ा	भय-में	यहोवा-के	खजाने-से	बहुत	और-व्याकुलता	उसमें
	H4592	H3374	H3068	H0214		H4103	

बैचेनी के साथ प्रचुर धन उत्तम नहीं, यहोवा का भय मानते रहने से थोड़ा भी धन उत्तम है।

17

טוֹב	אֲרֻחַת	יָרָק	וְאַהֲבָה־	שָׁם	מִשּׁוֹר	אָבוּס	וְשִׂנְאָה־	בוֹ׃
अच्छा	भोजन	साग-का	और-प्रेम	वहाँ	बैल-से	मोटे	और-घृणा	उसमें
	H0737	H3419	H0160	H8033	H7794	H0075	H8135	

घृणा के साथ अधिक भोजन से, प्रेम के साथ थोड़ा भोजन उत्तम है।

18

אִישׁ	חֵמָה	יְגָרֶה	מָדוֹן	וְאֶרֶךְ	אַפַּיִם	יַשְׁקִיט	רִיב׃
पुरुष	क्रोधी	भड़काता-है	झगड़ा-को	और-दीर्घ	क्रोध-वाला	शान्त-करता-है	विवाद-को
H0376	H2534	H1624	H4066	H0750	H0639	H8252	H7379

क्रोधी जन मतभेद भड़काता रहता है, जबकि सहनशील जन झगड़े को शांत करता।

19

דֶּרֶךְ	עָצֵל	כִּמְשֻׂכַת	חָדֶק	וְאֹרַח	יְשָׁרִים	סְלֻלָה׃
मार्ग	आलसी-का	जैसे-बाड़	काँटों-की	और-मार्ग	सीधों-का	राजमार्ग
H1870	H6102		H2312	H0734	H3477	H5549

आलसी की राह कांटों से रुधी रहती, जबकि सज्जन का मार्ग राजमार्ग होता है।

20

בֵּן	חָכָם	יְשַׂמַּח־	אָב	וּכְסִיל	אָדָם	בּוֹזֶה	אִמּוֹ׃
पुत्र	बुद्धिमान	आनन्दित-करता-है	पिता-को	और-मूर्ख	आदमी	तुच्छ-करता-है	माता-को
	H2450	H8055	H0001	H3684	H0120	H0959	H0517

विवेकी पुत्र निज पिता को आनन्दित करता है, किन्तु मूर्ख व्यक्ति निज माता से घृणा करता।

21

אִוֶּלֶת	שִׂמְחָה	לַחֲסַר־	לֵב	וְאִישׁ	תְּבוּנָה	יְיַשֶּׁר־	לָכֶת׃
मूर्खता	आनन्द	रहित-के-लिए	हृदय-के	और-पुरुष	समझ-वाला	सीधा-करता-है	चलना-को
H0200	H8057	H2638		H0376	H8394	H3474	H3212

भले—बुरे का ज्ञान जिसको नहीं होता है ऐसे मनुष्य को तो मूढ़ता सुख देती है, किन्तु समझदार व्यक्ति सीधी राह चलता है।

22

הָפֵר	מַחֲשָׁבוֹת	בְּאֵין	סוֹד	וּבְרֹב	יוֹעֲצִים	תָּקוּם׃
व्यर्थ-होती-हैं	योजनाएँ	अभाव-में	सलाह-के	और-बहुतायत-में	सलाहकारों-के	स्थिर-रहती-हैं
	H4284	H0369	H5475	H7230	H3289	

बिना परामर्श के योजनायें विफल होती है। किन्तु वे अनेक सलाहकारों से सफल होती है।

23

שִׂמְחָה	לָאִישׁ	בְּמַעֲנֵה־	פִיו	וְדָבָר	בְּעִתּוֹ	מַה־	טּוֹב׃
आनन्द	पुरुष-के-लिए	उत्तर-में	मुँह-के	और-शब्द	समय-पर	कैसा	अच्छा
H8057	H0376	H4617	H6310	H1697	H6256	H4100	

मनुष्य उचित उत्तर देने से आनन्दित होता है। यथोचित समय का वचन कितना उत्तम होता है।

24

אֹרַח	חַיִּים	לְמַעְלָה	לְמַשְׂכִּיל	לְמַעַן	סוּר	מִשְּׁאוֹל	מָטָּה׃
मार्ग	जीवन-का	ऊपर	समझदार-के-लिए	ताकि	हटे	शेओल-से	नीचे
H0734		H4605		H4616	H5493	H7585	H4295

विवेकी जन को जीवन—मार्ग ऊँचे से ऊँचा ले जाता है, जिससे वह मृत्यु के गर्त में नीचे गिरने से बचा रहे।

25

בֵּית	גֵּאִים	יִסַּח	יְהוָה	וְיַצֵּב	גְּבוּל	אַלְמָנָה׃
घर	घमंडियों-का	उखाड़ेगा	यहोवा	और-स्थिर-करेगा	सीमा	विधवा-की
	H1343	H5255	H3068	H5324	H1366	H0490

यहोवा अभिमानी के घर को छिन्न—भिन्न करता है; किन्तु वह विवश विधवा के घर की सीमा बनाये रखता।

26

תּוֹעֲבַת	יְהוָה	מַחְשְׁבוֹת	רָע	וּטְהֹרִים	אִמְרֵי־	נֹעַם׃
घृणा	यहोवा-के-लिए	विचार	बुरे	और-शुद्ध	वचन	मनोहर-के
H8441	H3068	H4284		H2889	H0561	H5278

दुष्टों के विचारों से यहोवा को घृणा है, पर सज्जनों के विचार उसको सदा भाते हैं।

27

עֹכֵר	בֵּיתוֹ	בּוֹצֵעַ	בָּצַע	וְשׂוֹנֵא	מַתָּנֹת	יִחְיֶה׃
दुःख-देनेवाला	घर-को	लालची	लाभ-की	और-घृणा-करनेवाला	उपहारों-को	जीवित-रहेगा
H5916		H1214	H1215	H8130	H4979	H2421

लालची मनुष्य अपने घराने पर विपदा लाता है किन्तु वही जीवित रहता है जो जन घूस से घृणा भाव रखता है।

28

לֵב	צַדִּיק	יֶהְגֶּה	לַעֲנוֹת	וּפִי	רְשָׁעִים	יַבִּיעַ	רָעוֹת׃
हृदय	धर्मी-का	सोचता-है	उत्तर-देने-के-लिए	और-मुँह	दुष्टों-का	उगलता-है	बुराई-को
	H6662	H1897		H6310	H7563	H5042	

धर्मी जन का मन तौल कर बोलता है किन्तु दुष्ट का मुख, बुरी बात उगलता है।

29

רָחוֹק	יְהוָה	מֵרְשָׁעִים	וּתְפִלַּת	צַדִּיקִים	יִשְׁמָע׃
दूर	यहोवा	दुष्टों-से	और-प्रार्थना	धर्मियों-की	सुनता-है
H7350	H3068	H7563	H8605	H6662	H8085

यहोवा दुष्टों से दूर रहता है, अति दूर; किन्तु वह धर्मी की प्रार्थना सुनता है।

30

מְאוֹר־	עֵינַיִם	יְשַׂמַּח־	לֵב	שְׁמוּעָה	טוֹבָה	תְּדַשֶּׁן־	עָצֶם׃
प्रकाश	आँखों-का	आनन्दित-करता-है	हृदय-को	समाचार	अच्छा	मोटा-करता-है	हड्डी-को
H3974		H8055		H8052		H1878	H6106

आनन्द भरी मन को हर्षाती, अच्छा समाचार हड्डियों तक हर्ष पहुँचाता है।

31

תָּלִין׃	חֲכָמִים	בְּקֶרֶב	חַיִּים	תּוֹכַחַת	שֹׁמַעַת	אֹזֶן
रहेगा	बुद्धिमानों-के	बीच-में	जीवन-की	डाँट-को	सुननेवाला	कान
	H2450	H7130			H8085	H0241

जो जीवनदायी डाँट सुनता है, वही बुद्धिमान जनों के बीच चैन से रहेगा।

32

לֵב׃	קוֹנֶה	תּוֹכַחַת	וְשׁוֹמֵעַ	נַפְשׁוֹ	מוֹאֵס	מוּסָר	פּוֹרֵעַ
हृदय-को	प्राप्त-करता-है	डाँट-को	और-सुननेवाला	प्राण-को	तुच्छ-करता-है	शिक्षा-को	त्यागनेवाला
	H7069		H8085	H5315		H4148	

ऐसा मनुष्य जो प्रताड़ना की उपेक्षा करता, वह तो विपत्ति को स्वयं अपने आप पर बुलाता है; किन्तु जो ध्यान देता है सुधार पर, समझ—बूझ पाता है।

33

עֲנָוָה׃	כָּבוֹד	וְלִפְנֵי	חָכְמָה	מוּסַר	יְהוָה	יִרְאַת
नम्रता	सम्मान-के	और-पहले	बुद्धि-की	शिक्षा	यहोवा-का	भय
H6038	H3519	H6440	H2451	H4148	H3068	H3374

यहोवा का भय लोगों को ज्ञान सिखाता है। आदर प्राप्त करने से पहले नम्रता आती है।